

पाँचवाँ अध्याय

कमल कुमार के कथा साहित्य का भाषा वैशिष्ट्य

कथा साहित्य लेखन की एक विशिष्ट भाषा होती है। यह भाषा एक तरह की अनजान भाषा होती है। इस अनजान भाषा के माध्यम से रचनाकार भाषा को जानकर पाठक एवं श्रोताओं से संवाद करता है। वह संवाद अपने कथा साहित्य एवं रचनाओं के माध्यम से करता है। भाषा और पाठक के बीच की कड़ी कमल कुमार एक अनुवादक के रूप में सेतु बनती हैं। यही भाषा सेतु उनके रचना प्रक्रिया को प्रभावित करता है जो साहित्य में एक नये विचारों की अभिव्यक्ति को साहस प्रदान करता है। लेखिका ने अपनी रचना प्रक्रिया में भाषा वैशिष्ट्य को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। लेखिका की कथा शैली, उनकी कथा भाषा, संवाद और उनके विचारों की अभिव्यक्ति को विशिष्ट बनाती है। उनके कथा साहित्य की भाषा में संवाद, (अंग्रेजी, पंजाबी), अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग, अधिक प्रचलित शब्द, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग आदि महत्वपूर्ण है। साथ ही उनके कथा शिल्प में गीतों का प्रयोग भी दिखाई पड़ता है। कमल कुमार ने भाषा के आधार पर जो भेदभाव समाज में हिन्दी और अंग्रेजी को लेकर दिखाई पड़ता है उसे अपने साहित्य में बखूबी दिखाया है। यह उनके कथा साहित्य में जगह –जगह पर देखा जा सकता है। कथा भाषा के संदर्भ में प्रत्येक रचना अपना अलग ही महत्व रखती है जो पाठक गण के समक्ष बहुत ही सरल तरीके से अभिव्यक्त होती है। इसमें पाठकगण को इनकी भाषा को समझने में कोई समस्या नहीं दिखाई पड़ती है। चाहे वह कोई भी संवाद शैली हो, क्योंकि लेखिका ने स्वयं सामाजिक परिस्थितियों में जाकर अनुभव किया है। लेखिका के किसी भी रचना में ऐसी कोई भी परिस्थिति नहीं है जो पाठक को समझ में न आये। साहित्य की भाषा तो

गंगा की तरह होती है वह जिधर भी रास्ता देखती है उधर ही चल देती है। लेखिका ने भाषा को रचना के अधीन कर पाठकगण के लिए सरल एवं सुबोध बनाया।

लेखिका ने अपने कथा साहित्य में ऐसा कोई पहलु नहीं छोड़ा है जो समाज के सत्य से परे हो। रचना में हर एक परिस्थिति को बहुत ही सरल ढंग से रचा है। जो रचना के पात्र या यथार्थ से दूर नहीं है। किसी भी कथा शैली में लेखिका की मानसिकता और अभिव्यक्ति के ढंग पर विमर्श किया जा सकता है। भाषा शैली को वैशिष्ट्य के आधार पर आसानी से परखा जा सकता है कि रचना किस परिस्थिति को बयां करती है। भाषा शैली के आधार पर लेखिका का व्यक्तित्व, निजता, अभिव्यक्ति कौशल एवं रचना प्रक्रिया प्रतिबिम्बित होती है जो एक साहित्यकार के लिए आवश्यक हो जाता है। लेखिका कमल कुमार की कथा भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति का एक मात्र सेतु भाषा ही है जो एक साहित्यकार के लिए बहुत सही ढंग निर्देशित कर सकता है। प्रत्येक साहित्यकार अपने रचना प्रक्रिया की भाषा शैली में पारंगत होता है। चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो। भाषा ही एक मात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा रचनाकार अपनी अभिव्यक्ति एवं विचारों को पाठकगणों तक पहुंचाता है। भाषा, लेखक की बाह्य एवं आंतरिक दोनों ही पक्षों को दर्शाता है। एक लेखक का जितना सम्बन्ध भाषा से होता है उतना ही गहरा सम्बन्ध संवेदना एवं अनुभव ज्ञान से होता है। भाषा के प्रति सामान्य व्यक्ति से कहीं ज्यादा एक साहित्यकार में वह संवेदना एवं अनुभव दिखाई देता है जो ग्रहण शीलता के मामले में रचनाकार में ज्यादा होती है। यहां लेखिका ने अपनी भाषा को अपनी आवश्यकतानुसार हर बार नए तरह से तैयार किया है।

लेखिका कमल कुमार की कथा भाषा उन्हें हिन्दी कथा साहित्य की चर्चित लेखिका के रूप में अभिव्यक्त करता है। जैसे लेखिका ने नाटक को छोड़कर लगभग सभी विधाओं में रचना की है किन्तु इनके समीप कहानी विधा रही है। इनके जीवन का यथार्थ दो धरातलों पर फैला

दिखाई पड़ता है एक ओर सामान्य व्यक्ति तो दूसरी ओर सामान्य स्त्री के रूप में सामान्य व्यक्ति जो वर्तमान में इस विषम परिस्थिति में भ्रष्ट शासन व्यवस्था के जाल में फंसा सत्ता की राजनीति में दशहत् की जिन्दगी जीता है। वहीं दूसरी तरफ सामान्य स्त्री जिसके भीतर न मुक्ति की चाहत है और न ही आत्मसम्मान की ज्योति का। दौड़ती भागती जिन्दगी के पहिए के नीचे वह हर पल रेंदी जाती है। स्त्री के हिस्से की धूप, हवा, बरसात, बादल और हरियाली उनकी मुट्टियों में जकड़ा है। इन सबसे वर्जित स्त्री का जीवन अंधेरों में भटकता रहता है। पर वह ऐसी स्थिति में भी हार नहीं मानती है। लेखिका ने समाज में व्याप्त लगभग सभी समस्याओं पर अपनी कलम चलाई है जो व्यक्ति के जीवन विकास में बाधा पहुँचा रही है। इन्होंने समस्याओं का चित्रण करने के साथ-साथ उनका उचित समाधान भी प्रस्तुत किया है। लेखिका कमल कुमार अपनी रचनाओं में ऐसी स्थिति पैदा कर देती हैं कि एक जिज्ञासा – सी बनी रहती है कि आगे का संवाद कैसा होगा। इनकी रचनाओं को पढ़ने की हमेशा उत्सुकता बनी रहती है कि आगे क्या होगा?

स्वगत कथन का प्रयोग

संवाद की भाषा भी बहुत ही सरल एवं सुबोध दिखाई देती है। जिसमें पात्रों की भावनाओं, क्रिया-कलापों एवं मनःस्थिति की ओर संकेत संवादों के माध्यम से किया जाता है। 'अपार्थ' उपन्यास का एक दृश्य है- "वह चली गयी.. . पता नहीं कहां?"¹ इस तरह लेखिका ने अशोक की पत्नी सुधा के अपने ही पति के बॉस के साथ भाग जाने के कारण अशोक की मनःस्थिति का चित्रण स्वगत कथन के माध्यम से किया है। अशोक बचपन से ही दुर्बल एवं मरियल से होने के कारण मां भी हमेशा उसके साथ भेदभाव करती है किन्तु जब उसकी पत्नी भी उसके बॉस के साथ भाग जाती है तो उसका दुःखी होना स्वाभाविक है। लेखिका ने उसकी पीड़ा को स्वगत कथन के माध्यम से बताया है – "साव ने अच्छा नहीं किया .. सुधा ने अच्छा

नहीं किया मां ने अच्छा नहीं कियासबने छला मुझे।¹² जो प्यार मां अपने बच्चों को दे सकती है। वह कोई और नहीं दे सकती है। अगर कहीं उसका अभाव रहता है तो बच्चा जीवन भर अपनी मां को कोसता रहता है। पूर्व में हो चुकी बातें, घटनाएँ वर्तमान में याद करते हुए संवाद स्वतः ही टूटते हैं और अधूरे से जान पड़ते हैं क्योंकि अतीत की स्मृति जिसे दुःख वेदना में अपनी याद सहेजे रहती है उसके कारण कोई भी दृश्य या संवाद पूरा नहीं हो पाता है।

उपन्यास का अशोक इसी तरह का पात्र है। उसी के शब्दों में "मेरा यह प्रतिरूप तुम्हारे ही कारण है मां आज यहां पहुंचा हूं..... तो तुम्हारी ही वजह से..। तुम वह धार हो जिस पर मेरा जीवन बार-बार कटता रहा, लहलुहान होता रहा । जीवित होकर भी जी नहीं सका मैं.. | बनने के सारे प्रयत्नों में बार... .. बार टूटता रहा । जीवन की सारी शक्तियों और क्षमताओं को झपट लिया था तुमने? जो सारा संसार मिलकर नहीं दे सकता था... वह केवल तुम दे सकती थी... . अपने प्यार से... .. अपनी ममता से... .. वो तुमने नहीं किया ।"¹³ पात्रों के अन्तर्मन को वाणी देने के लिए संवाद ही एकमात्र साधन होता है जिसके द्वारा पात्रों की वास्तविक स्थिति का पता चलता है। मां द्वारा बचपन से ही किए गए भेदभाव के कारण वह जिन्दगी में कभी भी कामयाब नहीं होता है। वह इन सबके लिए खुद को जिम्मेवार न ठहराकर अपनी मां को ही दोषी करार देता है ।

अंग्रेजी संवाद

अंग्रेजी-संवाद का भी लेखिका ने प्रयोग किया है। इनके कथा साहित्य में जगह-जगह अंग्रेजी का भी प्रयोग दिखाई देता है । अंग्रेजी में संवाद मुख्य रूप से शिक्षित वर्ग द्वारा ही प्रयोग में लाए गये हैं। 'आवर्तन' उपन्यास में मीरा रामचंद्रन विदेश से भारत में शोध सामग्री संकलित करने के लिए आई है। जब उसके घर में अमर (शोध निर्देशक) घंटी बजाता है तो वह उसे अपनी

रोम मेट शैली समझकर उससे संवाद करती है "द डोर इज़ ओपन शैला कम इन ।"⁴ 'हैमबरगर' उपन्यास की पृष्ठभूमि विदेशी होने के कारण उसमें अंग्रेजी संवादों का प्रयोग होना स्वाभाविक है। उपन्यास में गुरमीत कौर जब रतीन्द्र का अनचाहा गर्भ गिराने के लिए नर्सिंग होम जाती है तो वह डॉक्टर यह कार्य करने के लिए इंकार कर देती है। उस समय गुरमीत का रतीन्द्र से संवाद - "तू चिन्ता न कर रती । शी वाज़ ए ब्लडी बूचर।"⁵

इसी उपन्यास में जब विदेशी कैथी हिन्दू गरेवाल से विवाह कर लेती है। विवाह के बाद जब वह भारत आती है तो उसे यह लोग बड़े ही पिछड़े हुए लगते हैं। उस समय वह अपने पति से शिकायत करती है ओके । यू आर ए चीटा फ्रॉडा ए लाअर। यू हैव ब्रॉट मी इन दिस हेला ऐ प्लेस नॉट वर्थ लीविंग फार ए डे। आई हैव लिब्ड हेयर सिक्स मन्थस विद दीज़ बैकवर्ड अनकल्चरड पीपुल्स।"⁶ जब रतीन्द्र का बीजा बनवाने के लिए गुरमीत अफसर के पास जाती है तो अफसर का गुरमीत से संवाद - "आर यू सेटल्ड देयर?"⁷ उपन्यास में जब मोना रतीन्द्र से उसके कमरे में सोने की इजाजत मांगती है तो उस समय उसका संवाद—"कैन आई गो एंड स्लीप इन यूअर रूम।"⁸

लेखिका ने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग दो तरह से किया है। एक अधिक प्रचलित शब्द जो इस प्रकार है- डॉलर, अकाउंट, बैंक, टाइम, रिसर्च, अंडर स्टैंड, गुडनाइट, चैनल, किडनैप, प्रपोज, यूनिवर्सिटी, फिलासफी, कांट्रैक्ट, कैंसर, कैंसल, डिस्टर्ब, इंटरफेयर, प्रिंसिपल, इइवोर्स, प्रोजेक्ट ब्रेकफास्ट, प्लान, इम्पौटेंट, डस्टबीन, सर्टिफिकेट, पोलिटिशियन, अफेयर, लाइसेंस आदि शब्द आते हैं। दूसरा कम प्रचलित शब्द—ब्रिलिएंट, पोस्टिंग, कम्पलसरी, एक्सपीरियंस, डाइट, पार्टनरशिप, इक्वेरियम, डिजायर, डिलीट, एंटरी, स्पेस, ओवरटेक, टाइफाइड, कन्फ्यूज्ड, आटोमोबाइल, कम्पलीकेटिड, कम्प्रोमाइजिंग, टीनएजर, रैपुटेशन,

बुकमार्क, वेटलेसनेस, कलक्शन, डिसकस, आफकोर्स, आडटसाइडर, आदि अनेक शब्द दिखाई पड़ते हैं।

आँचलिक संवाद

कमल कुमार ने पंजाबी भाषा में भी संवाद किया है। ये मूल रूप से पंजाब की धरती एवं भाषा से जुड़ी है। इसलिये इनके कथा साहित्य में अधिकतर पात्र पंजाबी भाषा का प्रयोग करते हैं। 'हैमबरगर' उपन्यास में जब रतीन्द्र के पापा को उसके गर्भवती होने का पता चलता है तो वह उसे मारना शुरू कर देते हैं। उस समय अपने बेटे को समझाते हुए बेबे (दादी) का संवाद "ठंठे दिमाग नाल सोच पुत्तर। कुड़ी नू मार के स्यापा नहीं मुक्कन लगा।"⁹ रतीन्द्र बेगुनाह है, वह अपने पारिवारिक जनों को अपनी बात सुनने के लिए कहती है "बीजी एक बार मेरी बी सुन लो। मैन्नु अपनी बी कह लेन दो।"¹⁰ जब रतीन्द्र का मंगेतर उसका बलात्कार करने के बाद शादी से इन्कार कर किसी अन्य जगह शादी तय कर लेता है तो उस समय दुःखी होकर बेबे कहती है—“रूढ़ जाएं ऐसे बेईमान लोग। हुन की होएगा? वाहे गुरू किदर जाएंगे हमा।”¹¹ रतीन्द्र जब विदेश में रहती है तो उसे अपने पंजाब की सहेलियां और उनके साथ किए जाने वाला हंसी-मंजाक याद आता है। कई बार तो उसकी दादी उसे ज्यादा हंसने से मना करती हुई कहती थी—“ए तेरी गल्लां नई मुकनियां। कदो मुकनियां तेरियां गुल्लां चल हुन बस कर। नी - 5 एन्ना न हंस्यार कर। रूढ़जानिये सारा दिन दंद निकाल दीरैनि ऐ।”¹² "खोखल" कहानी में दिनेश भारत से विदेश गया है। जब वहां पर उसकी चाची उससे मिलने जाती है तो उसका दिनेश से संवाद—“एड्डा बड्डा घर पुत्तर। राजा के महल जैसा। जीऊंदा रै। जैसा रब तैनु भगा लगाया सबनूं लावै।”¹³ उसका कहना है कि तुम्हारा घर बहुत बड़ा है जैसा राजा का महल होता है। जीते रहो। जैसा भाग्य तुम्हारा है भगवान करे सबके भाग्य ऐसा ही हो।

मुहावरोँ एवं लोकोक्तियों का प्रयोग

कमल कुमार के कथा साहित्य में मुहावरोँ एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी दिखाई देता है। मुहावरोँ का प्रयोग फिजूलखर्ची को रोकने के लिए किया गया है। इनके प्रयोग से वाक्य भी आकर्षक बन जाते हैं और पाठक भी बात को जल्दी पकड़ लेता है। इनके कथा साहित्य में जिन मुहावरोँ का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार हैं- कोल्हू का बैल, दांतों तले उंगली दबा लेना, किसी के घर में आग लगाकर हाथ सेंकना, ठेंगा दिखाना, बाल की खाल निकालना, बाल बांका न करना, सिट्टी-पिट्टी गुम कर देना, दूध से मक्खी की तरह निकालना, सांप सूँघ जाना आदि शब्द पाये जाते हैं। लोकोक्तियों में धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का, जां को राखे साईयां मार सके न कोय, अंधेर नगरी चौपट राजा, कहां राजा भोज और कहां गंगू तेली आदि ये शब्द लोकोक्तियां हैं जिसका स्वतंत्र रूप में प्रयोग हुआ है।

लोकगीतोँ का प्रयोग

कमल कुमार के कथा साहित्य में शिल्प का प्रयोग भी बखूबी हुआ है। कमल कुमार के कथा साहित्य में गीतोँ का प्रयोग भी हुआ है। गीत सुखद और दुःखद दोनों तरह के हो सकते हैं किन्तु इनके कथा - साहित्य में गीतोँ का प्रयोग सुखद अनुभूतियों के लिए ही किया गया है। 'मै घूमर नाचूं' उपन्यास की पृष्ठभूमि चूँकि राजस्थान की है। इसलिए परिवेश को ध्यान में रखते हुए और पात्रों की सुविधा के लिए गीतोँ का प्रयोग राजस्थानी भाषा में ही किया है। कृष्णा का पति जब नौकरी से घर आता है तो वह उसके सिर पर पगड़ी रखकर खुशी को व्यक्त करते हुए गीत गाती है

“प्यास लागो म्हारो मजनू रे,
था बिना घड़ियन अखड़े रे,

मजने दारवा से बंगेलो छवाय,
था री बैठक म्हारो खेलणो रे।”¹⁴

गीत के माध्यम से वह पति की सुन्दरता का बखान करती है। लोक गीतों का प्रयोग खुशी व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

उपन्यास में कृष्णा अपने पति को सावन महीने की महत्ता के विषय में बताती है। इस महीने शादी-शुदा औरतें खाना बनाकर बाग-बगीचों में निकल जाती है और पति की दीर्घायु की कामना करती हैं कुंवारी लड़कियां सोमवार का व्रत रखकर अच्छे पति की कामना करती हैं। कृष्णा अपने पति को सावन महीने में गाया जाने वाला गीत सुनाती है जो राजस्थानी भाषा में गाया गया है-

"दल बादल विच चमके जी तारा

सांझ समे पिव लागे प्यारा,

आली जी से सेजा में रीझ रहूली,

काई रे मिजाज करे रसिया।”¹⁵

वह एक नादान बालिका है। जब भी उसका पति नौकरी से लौटकर आता है तो वह सजधज कर उसके गले में बाहें डालकर गणगौर खेल को गीत की तरह गाकर अपने पति को सुनाती है और साथ ही साथ नाचने भी लगती है। इस गीत में कुंवारी लड़कियां मां से कहती हैं कि मुझे ऐसे स्थान पर मत देना जहां गणगौर न खेला जाता हो

"खेलन दो गिणगौर

गाढ़ा मारू खेलन दरो गिणगौर

ओजी म्हारी गवरल रा दिन,
गाढा मारू खेलन दो गिनगौर ।'¹⁶

इसी तरह गीत गाकर कृष्णा अपनी खुशी को व्यक्त करती है। भारतीय संस्कृति में लड़के के जन्म पर अनेक तरह के गीत गाकर खुशी को व्यक्त किया जाता है। 'आवर्तन' उपन्यास में अमर की पत्नी पार्वती जब अस्पताल से जुड़वा बेटों को जन्म देकर आती है तो उसका घर हंसी ठहाकों से गुंजता है और घर के भीतर औरतें गीत गाकर खुशी व्यक्त करती हैं-

“हरया नी माए हरया नी भैणे
हरया ते भागी भरया नी हां,
जिस दिहाड़े मेरा हरया नी जमया ओही
दिहाड़ा भागे भरया नी हा ।”¹⁷

कमल कुमार के कथा साहित्य में उनकी अपनी भाषाओं में ज्ञान जितना सरल व सहज ढंग से पहुँचता है, उतनी ही मुश्किल दूसरी विदेशी भाषा से ज्ञान का पहुँचना है। रूस, चीन जापान सभी ने अपनी-अपनी भाषाओं के दम पर उन्नति की न कि अंग्रेजी भाषा के प्रयोग से। आज भारत में अंग्रेजी का ज्ञान इतना जरूरी कर दिया गया है कि तकनीकी रूप से सारी जानकारी उसी भाषा में मिलती है। कमल कुमार के 'आवर्तन' उपन्यास में आम जन से दूर होते ज्ञान की जानकारी का वर्णन मिलता है - "विश्वविद्यालयों और तकनीकी शिक्षा संस्थानों में गोबर गैस से लेकर किसानों के लिए अच्छे बीज, खेती की नयी तकनीक, कीड़ों से फसलों के बचाव इत्यादि की सारी जानकारी अंग्रेजी में क्यों लिखी और पढ़ी पढ़ायी जाती है। क्या भारत के किसानों को इस जानकारी को हासिल करने के लिए पहले अंग्रेजी स्कूलों में जाकर अंग्रेजी सीखनी चाहिए?"¹⁸ विज्ञान एवं तकनीक की जानकारी अगर हमारी अपनी भाषा में उपलब्ध करवाई जायेगी तब ही आम जन इसका लाभ सही ढंग से ले सकेगा। नेताओं द्वारा भी अपनी

भाषा को आजादी के साथ ही लागू न किया गया और अंग्रेजी को 15 वर्ष तक के लिए कार्य की भाषा बना दिया। समय के साथ-साथ समय-सीमा बढ़ाते रहे और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित नहीं किया गया, पर सब राजनेताओं की घटिया चाल थी जिसमें भारतीयों को देश के प्रमुख मुद्दों से अलग रखने की कोशिश की गई—“अंग्रेजी को शिक्षा के माध्यम के रूप में बदलकर हम अपनी संस्कृति अपने इतिहास और परिवेश सभी से कट गये हैं। स्वतंत्रता मिलने पर भी स्थिति बदली नहीं है। आज हमारे राजनेता भी यही खेल खेल रहे हैं। आम आदमी को भ्रष्ट शासन से बेखबर करने के लिए आसान तरीका है कि उनकी जुबान को प्रयोग हीन किया जाये।”¹⁹

'आवर्तन' उपन्यास में वत्स बैंक कर्मी है। मातृभाषा को लेकर वत्स बहुत भावुक है और भाषा के प्रति सम्मान रखता है। सरकार की अपनी भाषा को प्रफुल्लित करने वाली नीति के तहत ही बैंक में सारी चिट्ठियों के ड्राफ्ट वह हिन्दी में करता था जिसका विरोध उसका बॉस चिदम्बरम करता है। पर वत्स ने हिन्दी प्रेम के आगे बॉस की भी न सुनी और हड़ताल पर बैठ गया- "वत्स ने बैंक के सामने सत्याग्रह शुरू कर दिया। सुना है सात दिन तक भूखा पड़ा रहा। दो-चार हिन्दी सेवी संस्थाएं सामने आयीं और समझा-बुझाकर उसे विश्वास दिलाकर कि एक दिन सब ठीक हो जाएगा, उसे संतरे का रस पिलाया और उसका अनशन सत्याग्रह तुड़वा दिया। वत्स काम पर लौट आया पर चिदम्बरम के व्यवहार में कोई अंतर नहीं।"²⁰ चिदम्बरम द्वारा वत्स को बैंक के फर्जी केस में फंसवा दिया गया। बेकसूर साबित होने पर भी उसे जगह-जगह अपनी सफाई देनी पड़ी - "वत्स बेचारा किस-किस को अपनी सफाई देता। पत्नी के किसी रिश्तेदार ने भी वत्स के साथ उसी केस की बात की तो वह टूट गया। भावुक व्यक्ति था, सुना उसने एक दिन बैंक की आठवीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली।"²¹ भाषा के लिए इसी तरह हिन्दी के सेवा में लगा रहने वाला हिन्दी प्रेमी वत्स मारा गया और उसकी मौत के जिम्मेदार

व्यक्ति को सजा भी नहीं हुई और वो साफ बच गया। सरकारें भाषा को लेकर व्यावहारिक रूप में सजग नहीं हैं इसलिए ही आम जन को इसका शिकार होना पड़ता है। उपर्युक्त विवेचन में भी कमल कुमार के भाषा वैशिष्ट्य को बखूबी देखा जा सकता है कि वह अपने भाषा के माध्यम से एक सरकार की दोगली राजनीति पर कटाक्ष करती हैं। इनकी दोगली राजनीति में फंसकर किसी को आत्महत्या करनी पड़ी। वह भी भाषा को लेकर।

कमल कुमार के कथा साहित्य में भाषा को लेकर बच्चों पर बढ़ता अंग्रेजी का प्रभाव भी बहुत व्यापक स्तर पर पहुँच गया है। वर्तमान में भारतीय माता-पिता अपने बच्चों पर अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा देने के लिए पूरी तरह से दबाव देते हैं। हिन्दी भाषा के कारण मिलती उपेक्षा का सामना बच्चों को न करना पड़े। इसलिए बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में भेजा जाता है। 'आवर्तन' उपन्यास में डॉ. वर्मा हिन्दी के ज्ञान व अंग्रेजी भाषा के अज्ञान के कारण प्रमोशन न हासिल कर सका इसलिए अपने पांच वर्षीय बच्चे को पब्लिक स्कूल में डोनेशन देकर दाखिला करवाता है। वर्मा का बच्चा अंग्रेजी में कमजोर है किन्तु फिर भी उसे जबरन उसी विषय को पढ़ाया जाता है— "मारो न तो क्या करो डॉ. गुप्ता। कितनी परेशानियों के बाद इसका पब्लिक स्कूल में दाखिला कराया गया था। दाखिले के दो हजार रुपये दियो... .. हमने तो इसकी ट्यूशन भी लगवा कर दी पर फिर भी फेल हो गया। अगर इसे स्कूल से निकाल दिया तो हम लोग क्या करेंगे? तो क्या हुआ। दूसरे किसी हिन्दी माध्यम स्कूल में दाखिला करा दो वर्मा जी ऐसी क्या बात है। आप भी गजब करते हो, गुप्ता। हिन्दी माध्यम से पढ़कर बच्चा क्या करेगा आगे जाकर?"²²

उपन्यास का पात्र डॉ. वर्मा भाषा के प्रति कैसे कितना सजग हैं वह भी अंग्रेजी भाषा के लिए जो उसके जीवन में बाधा बनी। उसके बच्चे के लिए कोई बाधा न बने इसलिए वह अपने बच्चे को अंग्रेजी में पढ़ाने की कोशिश कर रहा है परन्तु वह असफल दिखाई देता है। इसलिए

भाषा का महत्व समझ कर अपने बच्चे को अंग्रेजी स्कूल में दाखिला देने का निर्णय करता है। हिन्दी माध्यम से पढ़ाई का आज कोई महत्व नहीं समझा जाता ऐसी सोच के मालिक लोग हमें पूरे भारत में देखने को मिल जायेंगे। उनकी ऐसी सोच बनने के पीछे शिक्षा व्यवस्था व सरकारों का हाथ है जो अंग्रेजी को बढ़ावा देकर अपनी भाषाओं को नीचे गिराती जा रही है। 'आवर्तन' उपन्यास में जब वर्मा का बच्चा हिन्दी कविता सुनाता है। तब वर्मा उसे बीच में ही टोक देता है- "मछली जल की रानी है। जीवन उसका पानी है।" डॉ. वर्मा के चेहरे पर एक रंग आता और दूसरा जाता। उसने लड़के को बीच में ही टोक दिया था। हनी बेटे। आंटी को बाबा ब्लैकशिप सुनाओं, जैक एंड जिल सुनाओं।"²³ यहां भी लेखिका के भाषा के महत्व को देख सकते हैं कि यहाँ कथा शैली की विशेषता को कैसे दिखाया गया है। इस प्रकार बच्चे को मातृ भाषा या राष्ट्रभाषा में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की बजाय उसको बीच रास्ते में ही टोककर अंग्रेजी का ज्ञान बघारने की शिक्षा माता-पिता द्वारा दी जाती है।

लेखिका ने भाषा के प्रति कैसी मानसिकता रही है उसे दिखाने का सफल प्रयास किया है। भारत में विदेशी भाषा के प्रभाव से अपनी भाषाओं को निम्न कोटि का समझा जाने लगा है। अंग्रेजों ने भारत पर दो सौ वर्ष तक राज किया। इतने समय तक भारत पर राज करने के लिए और भारतीयों को नियंत्रण में रखने के लिए उनके द्वारा सबसे पहले भारत की शिक्षा पद्धति में परिवर्तन किए गए। लार्ड मैकाले के द्वारा भारतीयों को अंग्रेजी विषय की शिक्षा दी जाने लगी और उनकी अपनी भाषा को धीरे-धीरे करके उनसे छीन लिया गया। आज अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी भारतीय अंग्रेजी प्रेम में इस कदर खोए हैं कि वो अंग्रेजी भाषा का ज्ञान जगह-जगह बघारने की कोशिश करते रहते हैं और अपनी भाषाओं को सम्मान देने की बजाए उसका अपमान कर रहे हैं। कमल कुमार अपने कथा साहित्य में भाषाओं के महत्व और मानसिक गुलाम भारतीयों के चित्र हमारे सामने 'आवर्तन' उपन्यास के जरिए लाती हैं। इस उपन्यास में

विदेशी छात्रा मीरा रामन्द्रन हिन्दी भाषा सीखने के लिए भारत आती हैं और भारत में भारतीयों द्वारा अपनी भाषा छोड़कर अंग्रेजी को अपनाने का विरोध करती हैं-"ओ-SS नो-SS, डॉ.गुप्ता पहली बात तो यह है कि आप मेरे साथ बिल्कुल अंग्रेजी नहीं बोलेंगे। अगर आप भी अंग्रेजी ही बोलेंगे तो मैं — 5 हिन्दी बाशा कैसे सीखूंगी। आप लोग भी मेरे साथ क्यों हिन्दी में नहीं बोलते हैं। मेरी कुछ समझ में नहीं आता।"²⁴ इसी तरह का एक और उदाहरण मीरा और सब्जीवाले के बीच देखने को मिलता है-"थैस मैडम ! बाई कैप्सी कम - कैवेज - कॉली फ्लॉर एकदम फ्रैस है। सपीनेच - सो-5 एकदम ग्रीन और फ्रैस है। यू कैन बाई दीज कैरेट — "²⁵ उसके बाद मीरा कहती है—“आप किरपा करके ये फलियां - गोबी-टमाटर और मटर दीजिए। "यहां पर लोग अपनी बाशा क्यों नहीं बोलते? सबी अंग्रेजी क्यों बोलते हैं?"²⁶ इस प्रकार विदेशी लड़की को हिन्दी भाषा का ज्ञान न होने पर भी भाषा को सीखना उसकी ललक को दर्शाता है। वहीं भारतीय अपनी भाषा को छोड़कर विदेशियों को प्रभावित करने के लिए झट से अंग्रेजी में बातचीत करने लगते हैं। जो उनके मानसिक गुलामी का प्रतीक है।

लेखिका कमल कुमार 'आवर्तन' में अमर के शब्दों में अपनी बात कहती हैं—मि. शर्मा, भाषा सिर्फ भावों का माध्यम नहीं होती। किसी देश व समाज की शक्ति व उसके जातिय इतिहास परम्परा, संस्कृति और संस्कार की वारिस होती है। अंग्रेजी भाषा को देशी भाषाओं की अपेक्षा अहमियत देना मानसिक गुलामी है। राजनीतिक सामंतवाद से निकलकर भाषायी सामंतवाद में पड़ना है।"²⁷ पहले हमारा देश सिर्फ राजनीतिक तौर पर अंग्रेजों का गुलाम था जिसे 1947 में आजाद करवा लिया गया किन्तु आज हमारा देश भाषा के जरिए गोरों का गुलाम बन गया है। आज भारतीय अंग्रेजी को अपने स्टेटस की भाषा से जोड़ते हैं। 'आवर्तन' उपन्यास की अंजलि छात्रा हिन्दी भाषा को न सीखकर अंग्रेजी को अपने स्टेटस के लिए इस्तेमाल करती है। अमर जब अंजलि से उसकी पुस्तकों पर अंग्रेजी कवर चढ़ाने के बारे में पूछता है तो वो कहती है-

"सर मैं यूं स्पेशल में आती हूँ तो मेरी सारी फ्रेंड्स मुझ पर हंसती हैं। मेरा मज़ाक उड़ाती हैं। सर, प्लीज आप मेरा विषय बदलवा दीजिये।"²⁸ इस प्रकार हिन्दी को लोग गरीबों की भाषा मानकर चलते हैं और अंग्रेजी से अपना स्टेटस थोड़ा ऊपर उठाने को कोशिश करते हैं। ठीक वैसा ही प्रयास अंजलि भी कर रही थी।

लेखिका ने भाषा का ढोंग रचने वाले लोगों पर व्यंग्य किया है। लेखिका हिन्दी भाषा के प्रति सम्मान दिखाते और घर से बाहर निकलकर भाषा का झंडा उठाए हर वक्त बहस में शामिल 'आवर्तन' उपन्यास के अमर पर तंज कसती हैं। महाविद्यालय में अमर हर किसी से भाषा के मामले को लेकर झगड़ा मोल कर बैठता है वहीं पर उसके खुद के बच्चे अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते हैं। अमर के घर जब रमानाथ अपने स्कूल 'भारतीय शिक्षा संस्थान' में बच्चों की घटती संख्या व लोगों के अंग्रेजी नाम जैसे स्कूलों में शिक्षा हासिल करने पर विचार और चर्चा करता है तो अमर बड़ी-बड़ी डींगें हांकता हुआ कहता है कि "बात यह है रमानाथ जी, यदि सिद्धान्तों के लिए जीना हो तो लाभ की आशा मत रखें। आप इसे मात्र एक शिक्षा संस्थान न मानकर अपने सिद्धान्तों का संघर्ष क्षेत्र मानें और इस चुनौती को स्वीकार करें। इस संस्थान का नाम भी वही रखें अंग्रेज यह देश छोड़कर चले गये तो क्या, आज भी हम लोग हैं अंग्रेजी के कुत्ते ही।"²⁹ अमर की ये सारी बातें कोरी जान पड़ती है क्योंकि जब रमानाथ अमर से उसके बच्चे विशु के स्कूल के बारे में पूछता है तो अमर बात गोल-मोल करते हुए कहता है कि "विशु तो शुरू से ही उसी स्कूल में पढ़ रहा है। बार - बार बच्चे का स्कूल बदलना ठीक नहीं। पर मैं अपने मित्रों से और जान-पहचान वालों से भारतीय शिक्षा संस्थान के संबंध में बताऊंगा अवश्य।"³⁰ अमर का खुद का बच्चा तो अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता है किन्तु रमानाथ को वो भरोसा दिलाता है कि उसके हिन्दी माध्यम के स्कूल में बच्चों के जाने की बात औरों से भी करेगा। अमर के व्यवहार को उसकी पत्नी पार्वती अच्छे से समझती है और कटु सत्य वचन

बोलती हुयी कहती है "मास्स जी! दूसरों को उपदेश देना बड़ा आसान होवे, लेकिन जो आदर्श की बात करनी हो तो अपने घर ते शुरू करनी चाहिए।"³¹ पार्वती के वचन अमर को काफी कष्ट देते हैं, किन्तु उसका कहा एक - एक शब्द सत्य है क्योंकि अमर कॉलेज में और अपने परिचितों में हमेशा अंग्रेजी की तो खिलाफत करता है और घर में अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूल से ही शिक्षा दिलाता है जहां उसकी कथनी और करनी में अंतर देखने को मिलता है।

हिन्दी वालों की स्थिति देख कर अंग्रेजी का प्रभाव ज्यादा दिखाई दे रहा है। हिन्दी बोलने वालों को जाहिल या गंवार समझा जाता है इसलिए उनकी स्थिति निम्न ही मानी जाती है। हिन्दी बोलने वालों में इस कारण आत्म हीनता का भाव देखने को मिलता है। हिन्दी का नाम सुनते ही लोग नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं। 'आवर्तन' उपन्यास का नायक एक महाविद्यालय में हिन्दी का प्रवक्ता है। जब भी मीरा रामचन्द्रन के साथ पार्टी में जाना होता है वहां के माहौल के अनुकूल वो न तो खुद को ढाल पाता है और न ही दूसरे उसे ढलने देते हैं- "डॉ. दवे ने अचानक बहस के बीच रूककर उसकी तरफ बड़े गौर से देखा था और पूछा था, 'हाऊ डू यू नो, शर्मा ? हम एक ही कॉलेज में हैं। मेरी कलीग है वह।

इन द सेम डिपार्टमेंट?

नहीं, वह अंग्रेजी विभाग में हैं।

और आप?

मैं .. क्षणांश को वह झिझका था फिर उसे कहना पड़ा था, मैं हिन्दी विभाग में हूं कहकर उसके मुंह का स्वाद फीका - सा हो गया था। ओ-5 आई सी-5 डॉ. दवे ने कंधे उचकाये थे और वह डोर अटक जाने वाले पतंग की तरह हवा में झटके खाने लगा था।"³² इस तरह अमर अगर न भी हिन्दी को लेकर शर्मिन्दा महसूस करना चाहे किन्तु माहौल उसे हमेशा ही अपने

विषय को लेकर शर्मिन्दा महसूस करवाता रहा। अमर इसी कारणवश अपने बारे और हिन्दी के बारे में बाहर जाकर बोलने से कतराता –“विभाग पूछने ‘इंडियन लिटरेचर’ या डिपार्टमेंट ऑफ इंडियन लैंग्वेज’ कहकर उसने एक बड़े क्षितिज को पकड़ने का प्रयास किया था पर अगले ही प्रश्न पर ‘विच इंडियन लैंग्वेज?’ ‘इंडियन लिटरेचर’ मीन? सवालों के जवाब में ‘हिन्दी विभाग’ कहते ही उसे वह पूरा वर्ग उसकी सम्मानित स्थिति से अपदस्थ कर देता था। आज भी वह वैसा ही अपदस्थ—सा बैठा था।”³³

समाज में इस तरह पढ़े-लिखे व्यक्ति का अपने ही देश में अपनी भाषा को बोलने पर अपमान एवं दूसरी भाषा को धारा – प्रवाह से बोलने वालों का सम्मान होना अपने ही देश से भारतीयों को काट देता है और मैकाले की नीति के सफल होने का दम भरता है। अमर कहता है - "लार्ड मैकाले का षड्यंत्र था भारत में भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा द्वारा अपने ही खिलाफ कर दिये जाने का। वह षड्यंत्र आज पूरी तरह सफल हुआ है। तभी आप लोगों को मेरी बातें समझ नहीं आती इसलिए क्योंकि हमारी अपनी सोच अपने विचारों को अंग्रेजीयत ले डुबी है।"³⁴ यहां लेखिका ने भाषा को लेकर इस तरह की अंग्रेजी का गुणगान करते भारतीय अपनी मातृभाषा का अपमान करने से भी गुरेज नहीं करते और जो भारतीय मातृभाषा बोलते हैं उन्हें अनपढ़ या जाहिल समझते हैं ऐसे चरित्र का वर्णन करती हैं। आज अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित हमारी पीढ़ी भारतीय भाषा में पढ़े हुए लोगों को हेय दृष्टि से देखते हैं। ‘आवर्तन’ उपन्यास में अमर डॉ. वर्मा को हिन्दी भाषा का महत्व बताता है तो वर्मा उसे व्यावहारिक धरातल पर हिन्दी के कारण उसे झेलने पड़े दंश की कहानी बयान करता है—“अब आप आदर्श की और सिद्धान्त की बात रहने दें गुप्ता जी, व्यवहार की बात कीजिए। क्या आपके और मेरे सोचने से समाज और व्यवस्था बदल जायेगी। दूर क्यों जाते हैं आप, मेरी तरफ देख लो, रूक गयी न आखिर मेरी प्रमोशना वो कल का लड़का मेरे सिर पर आकर बैठ गया और मैं कुछ नहीं कर सका। अब

हमारे साथ तो जो हुआ से हुआ, कम से कम हमारे बच्चे तो वह उपेक्षा और तिरस्कार न पायें।"³⁵ डॉ. वर्मा के साथ अंग्रेजी के कारण जो भेदभाव हुआ उस कारण उनकी प्रमोशन रोक दी गई और अंग्रेजी माध्यम से पढ़े लड़के को उस का बॉस बना दिया गया। इस प्रकार आप जिस भाषा को अधिक महत्व देंगे वही भाषा आप पर हावी होने लगेगी। इस प्रकार अपनी मातृ भाषा से वंचित एवं दूसरी भाषा के अधीन होने की संभावना बढ़ जाती है।

संदर्भ ग्रंथ -सूची

1. अपार्थ, पृ0 3।
2. अपार्थ, पृ0 2।
3. अपार्थ, पृ0 114–115।
4. आवर्तन, पृ0 99।
5. हैमबरगर, पृ0 35।
6. हैमबरगर, पृ0 77।
7. हैमबरगर, पृ० 36।
8. हैमबरगर, पृ० 93।
9. हैमबरगर, पृ० 12।
10. हैमबरगर, पृ0 19।
11. हैमबरगर, पृ0 21।
12. हैमबरगर, पृ० 86।
13. अन्तर्यात्रा, पृ0 206।
14. मैं घूमर नाचूं, पृ0 76।
15. मैं घूमर नाचूं, पृ0 79।
16. मैं घूमर नाचूं, पृ0 86।
17. आवर्तन, पृ० 88।
18. आवर्तन, पृ0 58।
19. आवर्तन, पृ0 28।
20. आवर्तन, पृ0 61-62।

21. आवर्तन, पृ० 62 ।
22. आवर्तन, पृ० 74 ।
23. आवर्तन, पृ० 75 ।
24. आवर्तन, पृ० 20 ।
25. आवर्तन, पृ० 47 ।
26. आवर्तन, पृ० 47 ।
27. आवर्तन, पृ० 45 ।
28. आवर्तन, पृ० 30 ।
29. आवर्तन, पृ० 79 ।
30. आवर्तन, पृ० 80 ।
31. आवर्तन, पृ० 80 ।
32. आवर्तन, पृ० 37 ।
33. आवर्तन, पृ० 37 ।
34. आवर्तन, पृ० 27 ।
35. आवर्तन, पृ० 75 ।

36.

-
- 1
 - 2
 - 3
 - 4
 - 5
 - 6
 - 7
 - 8
 - 9
 - 10
 - 11
 - 12
 - 13
 - 14
 - 15
 - 16
 - 17
 - 18
 - 19
 - 20
 - 21
 - 22
 - 23
 - 24
 - 25
 - 26
 - 27
 - 28
 - 29
 - 30
 - 31
 - 32
 - 33
 - 34
 - 35